E-Learning Study Material

Name of Teacher - Prof (Dr.) YADWENDRA SINGH

Subject - Economics

MAHARAJA COLLEGE, ARA BIHAR

VKS University, ARA BIHAR

B.A I Hons

सूक्ष्म अर्थशास्त्र या व्यष्टि अर्थशास्त्र :- (Micro Economics)

आर्थिक विश्लेषण की प्रक्रिया में प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों (Classical Economists) ने सूक्ष्म अर्थशास्त्र की अवधारणा को विकसित किया था। माइक्रो (Micro) शब्द ग्रीक शब्द 'Mikros' से बना है। इसका अर्थ छोटा या सूक्ष्म से लगाया जाता है। अतः सूक्ष्म अर्थशास्त्र व्यक्तिगत उपभोक्ताओं, व्यक्तिगत उत्पादकों, व्यक्तिगत फर्मों और व्यक्तिगत उद्योगों से सम्बन्धित सिद्धान्तों का अध्ययन करता है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने सूक्ष्म अर्थशास्त्र को ही आधार मान कर अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। एवं एडम स्मिथ इस बात को स्वीकार कर चुके थे कि व्यक्ति केवल स्वहित की भावना से प्रेरित होकर कार्य करता है। यह उनका सूक्ष्म अर्थशास्त्र की मान्यता का कथन है। नवप्रतिष्ठित अर्थशास्त्री मार्शल तक ने व्यक्ति के भौतिक कल्याण की अभिवृद्धि को अतः यह सिद्धान्त एकांगी एवं अपूर्ण है।

Scanned with CamScanner

पेज-2

ही अर्थशास्त्र की विषय सामग्री का आधार बना दिया। वास्तव में, प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अन्तर्गत ही व्यापक अर्थशास्त्र का भी अध्ययन किया था अलग से नहीं। सूक्ष्म अर्थशास्त्र (Micro Economics) की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नांकित हैं:-

(i) प्रो बोल्डिंग (Prof Boulding) के अनुसार- "सूक्ष्म अर्थशास्त्र विशिष्ट आर्थिक घटनाओं तथा उनकी पारस्परिक प्रतिक्रिया का अध्ययन है तथा इसमें विशिष्ट आर्थिक मात्राएँ तथा उनका निर्धारण भी सम्मिलित है।"
(Micro-Economics is the study of particular economic organisms and their interaction and of particular economic quantities and their determination.)

(ii) हैण्डरसन तथा क्वाण्ट (Henderson and Quandt) के अनुसार- "व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तियों व ठीक से परिभाषित व्यक्ति समूहों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन होता है।"
(Micro-Economics is the study of economic actions of individuals and well defined group of individuals)

(iii) प्रो० चैम्बरलिन (Chamberlin) के अनुसार- "सूक्ष्म अर्थशास्त्र पूर्णतया व्यक्तिगत व्यवहार पर आधारित है तथा इसका सम्बन्ध 'अन्तर-वैयक्तिक सम्बन्धों' से भी होता है।"

Scanned with CamScanner

(iv) प्रो० लर्नर के अनुसार - (Prof Lerner) :-
"व्यष्टिगत अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र को माइक्रोस्कोप से देखा जाता है जिससे यह पता चल सके कि आर्थिक जीव के लाखों कोष (cells) व्यक्ति व परिवार - उपभोक्ताओं के रूप में तथा व्यक्ति व फर्म उत्पादकों के रूप में सम्पूर्ण आर्थिक जीवन के कार्य-चालन में अपना योगदान किस प्रकार दे रहे हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि सूक्ष्म अर्थशास्त्र में हम विशिष्ट आर्थिक इकाईयों में आर्थिक इकाईयों के व्यवहार का अध्ययन करते हैं। जैसे वस्तु विशेष के मूल्य में वृद्धि हो जाने से उपभोक्ता उस वस्तु के उपभोग को कम कर देता है, परन्तु उत्पादक उस वस्तु के उत्पादन को बढ़ाता है। इस प्रकार की व्यक्तिगत घटनाओं का अध्ययन सूक्ष्म अर्थशास्त्र में ही संभव है।

सूक्ष्म अर्थशास्त्र की विशेषताएँ :-
Characteristics of Microeconomics

सूक्ष्म अर्थशास्त्र की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(1) व्यक्तिगत इकाईयों का अध्ययन :- सूक्ष्म अर्थशास्त्र, व्यक्तिगत समस्याओं का अध्ययन करते हुए सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के विश्लेषण में सहायता प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

(2) छोटे छोटे चरों (Variables) का अध्ययन करता है - सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अंतर्गत छोटे छोटे चरों का अध्ययन किया जाता है। लेकिन इनका प्रभाव सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर नगण्य होता है।

(3) व्यष्टिगत मूल्य निर्धारण का अध्ययन :- प्रो० शुल्ज (Prof Schultz) के अनुसार - सूक्ष्म अर्थशास्त्र का मूल्य यंत्र कीमत सिद्धांत है।

सूक्ष्म अर्थशास्त्र का प्रयोग एवं उसकी आवश्यकता

:- सूक्ष्म ~~अर्थ~~ अर्थशास्त्र का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता आया है। यद्यपि वर्तमान में व्यापक अर्थशास्त्र का अधिकाधिक उपयोग होने लगा है फिर भी सूक्ष्म अर्थशास्त्र की उपयोगिता निम्नलिखित है :-

(i) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के ज्ञान के लिए आवश्यक :- व्यष्टिगत मांग एवं व्यष्टिगत उत्पादन आदि के संयोग से ही सामूहिक मांग व पूर्ति के रूप में सामने आता है। अतः सम्पूर्ण अर्थशास्त्र के स्वरूप की जानकारी के लिए व्यष्टिगत इकाइयों की जानकारी होना आवश्यक है।

(ii) आर्थिक समस्याओं के निर्माण में सहायक :- आर्थिक समस्याओं में मूल्य निर्धारण व वितरण की समस्या महत्वपूर्ण है। सूक्ष्म अर्थशास्त्र में मूल्य निर्धारण के लिए मांग एवं पूर्ति मॉडल का उपयोग होता है।

(iii) आर्थिक नीति के निर्धारण में सहायक :- इसके अन्तर्गत सरकार की आर्थिक नीतियों का अध्ययन इस दृष्टि से किया जाता है कि उनका व्यष्टिगत या विशिष्ट इकाइयों के कार्यान्वयन पर कैसा प्रभाव पड़ता है।

Scanned with CamScanner

सूक्ष्म अर्थशास्त्र की सीमाएँ :- सूक्ष्म अर्थशास्त्र का प्रयोग प्राचीन काल से ही आर्थिक समस्याओं के अध्ययन के लिए एक प्रमुख शाखा के रूप में प्रयोग होता आ रहा है। लेकिन इसकी कुछ सीमाएँ एवं दोष भी हैं जो निम्नांकित हैं :-

(1) अर्थव्यवस्था का एक पक्षीय चित्र प्रस्तुत करना :- सूक्ष्म अर्थशास्त्र में केवल व्यक्तिगत इकाइयों का ही अध्ययन किया जाता है। इसमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को स्थान नहीं दिया जाता है। फलतः इस विश्लेषण से देश व विश्व की अर्थव्यवस्था का सही सही निदान एवं उपचार नहीं हो पाता है।

(2) काल्पनिक :- सूक्ष्म अर्थशास्त्र अवास्तविक मान्यताओं के आधार पर कार्य करता है जिसके कारण इसे विश्लेषण को काल्पनिक भी कहा जाता है। क्योंकि यह पूर्ण रोजगार की स्थिति में ही कार्य करता है। प्रो० किन्स के अनुसार - पूर्ण रोजगार की कल्पना करना अपनी कठिनाइयों से मुख मोड़ना है।

(3) कुछ आर्थिक समस्याओं के लिए अनुपयुक्त :- कुछ आर्थिक समस्याओं का स्वरूप ऐसा होता है कि जिनका अध्ययन सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अन्तर्गत नहीं हो सकता। उदाहरणस्वरूप मौद्रिक नीति, राजस्व नीति, औद्योगिक नीति आयात निर्यात नीति आदि का उल्लेख किया जाता है। इसलिए वर्तमान समय में व्यापक अर्थशास्त्र (Macro Economics) का प्रचलन बढ़ने लगा है।

(4) सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण के अनेक निष्कर्ष सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की दृष्टि से ठीक नहीं होते क्योंकि व्यक्तिगत धारणाओं को व्यापक क्षेत्र के लिए उपयुक्त नहीं माना जा सकता।

Scanned with CamScanner